

बोद्धार्थिना दत्तयहं हृत्युद्दिः कार्या ।

ओम जैन धर्म प्रकाश

पुस्तक अस सु
भाषि ६ हजार
१० सी अधीन



वीर सं. २४८८
वि. सं. २०१२
ई. स. १६५६



जहा सागडिओ जाण,
समं दिचा महापह ।
विसं मगमोइणो,
अनखे भगमिस सोयइ ॥१४॥

एने धर्मं पिउकर्म,
अहर्मं पडिवजिआ ।
बाले मच्चुमुहं पत्ते,
अनखे भगे व सोयइ ॥१५॥

वेम रथ हङ्कार लणुवा छता राजभार्ग केवा
थेदी रस्ताने त्याग करीने विषम चार्यभां चोतानो
रथ लहू लय अने तेने खरिथुमे रथनी धरी लांगी
लहू त्यारे शेषाहुद अने छे ।

सेवी अ रीते धर्मभार्गने त्याग करीने अधर्मनो
अंजीदार करेनार मुत्युना मुख यासे महाचेत अज्ञानी ग्राणी
लाणे अवननी धोन्दी लांगी गष्ठ हाय तेन चाक करे छे ।

श्री उत्तराध्ययन सन्, अध्य पं २४८८ १८१८

श्री जैन धर्म प्रकाशक सभा : बाबनगढ़

अग्रटर्टी :

पुस्तक उद्धरण
अंक ६

चैन

वीर सं. २४८८
वि. सं. १०१२

श्री

नवदर्शभंगना ध्यानधी, होय सिद्धि भुजदय;
सांकषणां सुख उपले, क्लेशी भव भव जय. १
नवदर्शभंग समरां, नवि होय दृष्ट्यानं;
उत्तरोत्तर शुभ लाभधी, पामे विमल ध्यान. २
आराधना करो उत्तुरधी, अहसाठ उपवास; ३
अथवा पठ अङ्गर मुजाय, छूटा करो उपवास. ४
अश्री शक्ति ले होय निळ, नव अकासने थाय;
करो भक्ति भुजमानधी, मनवांचित इण थाय. ५
नव लाय नवदर्श के गण, तिर्थांच नवकामं न जाय;
विविष्णुर्क शुभ आवधी, सिद्धिगतिमां जाय. ६
करो प्रतिकमलु ऐ एकना, हेवचंदन वरु वार;
ऐ वार पडिलेहन करो, किन पूजे त्रिलु वार. ७
ते ते पठ्हु गणगुणु गण्डा, हो हुमरो जप;
करता नव अकासलु, काया निर्मल थाय. ८
हुरता इरता सुरता, ध्यान धरे के चित;
वन्य छे कृत्पुरुष छे, लुनित तास पवित. ९
सामुदायिक आ तप करी, पामे नित्यनह;
प्रेम ज्यून्युरिनो शिष्य तो, कापे कर्मीना करी. १०

—सुनिराजश्री नित्यनंदविजय

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०

(લક્ષીગીત)

શ્રી મહા બી ર જ ય ત િ

ક

શ્રી પાદમંડિ
પીરામંડિ
અર્દીપંડિ

વિશ્વા સતી હુંચી ગતિથી ચાલતી અતિ શોભતી,
જસ વહન અંધુજ વિમલ વિક્ષિત હેરબરશુણ વર્ષતા;
જસ લાવ છે સુવિશ્વાલ શાશિસમ લોાત નયને શોભતી,
આપણસ્તવા¹ ઈન્હિં સાક્ષાત થઈ છે હર્ષતી. ૧
ગુંઠી કલાકૃતિ કુલુમાં વેણી શોભતી લિમ નાગિણી,
કુલુમ તિકા ભાવે સુયોગિત લે થઈ શુષ્ણગિણી;
કંઈ ધરે ભાવા કુલુમની વિવિધ રંગ સુવાસિની,
ધારે અવંકૃત હેમની રસે જરી શુષ્ણ ધામની. ૨
વાણી ઉદ્યારે વહનથી લિમ કુલુમ ઘરતા વૃદ્ધથી,
એ મધુર ડેસ્ટર રસ કર્યા થાર્યે રમે રવનાથી;
ગર્વપ્રાણે ચિત્ત ઉછે. ક્ષણદ્વારે હંદોમિશ્રા,
સાગર જાંદે મેળન ઉછળતા જાગતા તિમ હોડદો. ૩
સિદ્ધાર્થ નૃપ ધનધાન્યથી અધિકાર્થી વધતા રહ્યા,
વૈવા અને અતુરંગ સેના સેવના કરતા રહ્યા;
નેતા ધરે પણ સનારું ને શાર રદ સાચે રહ્યા,
સહુ ગર્ભના જ પ્રભાવ એ છે સુજનનાન મોદી રહ્યા. ૪
ભક્તિ પ્રજા સિદ્ધાર્થ નૃપને માનતી પિણ તુર્ય એ,
ગણે પ્રભને આસ સમજ ધન્ય તે સહુને લગે;
એવો અર્પૂર પ્રભાવ ગણે જગ વિશે એ ગર્ભનો,
જગ તારવાને આવતો ઉદ્ધાર કરવા સર્વનો. ૫
વિશ્વા કહે સેસું જઈ સુરચિત કંશસત લેણ,
ને થઈ અવંકૃત ગર્જતાણી અંભાણી ઇસું ગરે;
માથે ધરતું છત ચામર પાડિજાન પિણદાવતિ,
ઉચ્ચાર સુષેદી માહીને કાડ સહુ કોડે વળી. ૬
નહી ડેર્ય જન ભૂપ્ણી રહે નહી ડેર્ય ઉથાડા રહે,
સુખથી રહે સહુ સિતયાંબે ડેવશુન જાણી વહે;
સુજ રાજયમાં નહી ઓર વસતા અ કુલાલ ધરે સહુ,
ન્યાં વિસુદ્ધતા ધન ધાન્યની દાયિ ધરતું નહી ઠેઠુ. ૭
વાંચ રદી કદ્વાણી જગમાં બરે શર્દીત રહે,
સુદ્ધક શુદ્ધાના હોહેઢો વિયક્તાના પૂરા થયે;
જગ જોધવા બે.વીસના જિતારીધિયતિ આચ્યા નિન્હાં,
સુરદોકમાં આનંદ ઉછળ્યો જા જયાદવા લિદા. ૮

૧ નિર્દીની. ૨ પોદાના. ૩ કલાન.

— (૧૧) —

भृत्य भूत्यां जेतुलं प्रयैर्दीपि सर्वं चंचलकरिष्यति,
ज्ञानसा यथा के प्रश्न उहुने नवद हर्ष विकापिना;
किंदर्थे तुलिदिशिष्यति ने विजग्न ज्ञानसंप्रेपिनी,
विहृतात्मा रोमांच दृष्टिप दीप्त्यने विस्तारिष्यति. ६
दिनकर अगाधम जित्ये के लक्ष्यन तुमरिना,
ते दीप्तो रहेहे शुभांतर धर्म ज्ञाने शैषतो;
दयु द्वैर्देव शक्त्यात्मो आनंदे विस्तारतो,
शैषतोराजु। आत्मोद्दिनिनो शीत्र मार्ग भवत्वतो. १०
यहु दान्व वरदान रभण वर्णना दूर्योक्तव लतावतो,
फुडगद अर्थे आत्मा विलागी लोह हेह कशवतो;
अग धारण ने येषां त्र्यां संसार जलनिधि तारतो,
ते विरल्लवे वीरविन बावेन्दु निज भन धारतो. ११

१ शैषमास.

प्र
भ
वी
र
से।

परम अहिंसाके ओ साधक, औन हुवे हो क्यों तुम आज ? ।
पुनः गुंजादो उस वाणीको, जीससे हो सुखमय सब राज ॥१॥
त्राहि त्राहिकी मच्छ धुम है, नहीं शान्तिका है लवलेश ।
अनेकान्तका पाठ पढ़ादो, मिट जावे जीससे सब हेश ॥२॥
बाढ़ोवन्दी तीर्थीचर्चाकी, वहती धारा शासनमें ।
छिन्नभिन्न और फूटफक्कटी, प्रगटी ज्वाला शासनमें ॥३॥
मुझाये सब पुष्प तत्के, उदासीनदा छाई है ।
प्रगटे कोई युग्मीर विश्वमें, येही आश लगाई है ॥४॥
माना हुम हो तीर्थेकर प्रसु, आ न सकोगे इस जगमें ।
आज बतादो करुण तपसी, रहने दोगे कंटक सरमें ॥५॥
लाखों अनुयायि होते भी, नायक जीसका ऐक नहीं ।
सूरि सेंकड़ों होते भी, शासनकी परवाह नहीं ॥६॥
ऐसी परिस्थिति होनेसे, शासन विना धनीका लखते हैं ।
तीर्थ हड्डपकर मन्दिर छीनते, और क्या क्या आफत ढहते हैं ॥७॥
अब रग रगमें नूतन वल भर दो, होवे अहिंसाका प्रचार ।
जिये बैनसे जगके प्राणी, सचे न फिरसे हाहाकार ॥८॥
धर्मान्यता सब मिट जावेगी, रहेगा तेरा अमर संदेश ।
जुल्मी दयालु वन जावेगे, सुनकर तेरा दिव्य आदेश ॥९॥

ॐ
राजमल
भण्डारी
आगर (मालवा)

॥ श्री वर्षभान-महावीर ॥

[१२]

पांचमे अलंकृतवेदोऽपि (पंक्तिमा लक्ष)

आ पांचमा अलंकृतवेदोऽपि मात्रा भूतरो हता. आ हेवेऽक्ती जगन्य स्थिति उ सागरोपमनी अताकृ वामां आवी छे. प्रथमधी भाईने उ प्रतरनी स्थिति आ, ८, १०, ६, ४, ३, १० सागरोपमनी अतारा छे. त्यां उत्पन्न थनार आष्टुनुं हेवमान पूर्वात् होय छे. ए पांचमा हेवेऽक्ती भूमिका छे, जीमा समानवृभूमिये खीलुं कृष्ण हेवेऽक्त नद्य अने गोंगा ईश उपरना छहा प्रतर पूर्व चेतानान् भद्रमूख्यवान् विमानमार्हे रहे छे अने अने समानिक तथा अंगक्षडे हवा गोटी साम्यामां होय छे. हेवमान असमुच्चया प्रतर हीइ आषुप्य साथे जिल्दा इमार्हे इत्युत् जाव छे अलंकृते के अषुप्य प्रतरे अनेक वस्तुत् जाव तेस हेवमान आष्टु यत् जाव. ८ सागरोपम आषुप्यदण्डा हेवेऽक्त हेवमान पूर्व लाय होय छे, नव सागरोपम आषुप्यमानवाणुं शरीर वृक्ष लायात् होय छे लाई हशा सागरोपम आषुप्यमानवाणा हेवेऽक्त शरीर. प्रमाणु पूर्व लाय होय छे. पांचमा अलंकृतवेदोऽपि हेवान विष संपर्क मात्राया होय छे, हेवेऽक्त जाम-ज्ञाग थो नद्यी. आदी नाटक बोले आशण अतावा छे ते सर्व आ हेवेऽक्तामा पूर्ण याहु नहे छे. आ हेवेऽक्तामा हेवाना होती नद्यी; पूर्ण प्रथमना ये हेवेऽक्ती होनाये. त्यां आवी शक्त छे.

आ पांचमा अलंकृतवेदोऽपि भर्तियो त्यव उपर वर्षदेवा शेषा कृतमां असाहि नव आप्यो हुदो. आ ए हेवेऽक्त संभूती इतीकृत आप्यामां आवी छे. आ आष्टु अनेक श्वाने अनेक दृष्टि जन्मे छे, पूर्ण हेवेऽक्त भीने ज्ञ कर्त त्रैव न थाय. याहा अनां पर्वदृष्टमां श्वाने एक अनेक नाटक वाप उत्पन्न थाय. एक श्वानाके भत्तात्युं के के ज्ञाना त्रैष्ठ नपि नद्यी, जीवी अद्य वेतन नद्यी, एवुं औष्ठ श्वान नद्यी के ज्ञानुं होष्ठ हुय नद्यी त्यां आ प्राष्टु

अनंतीवार उत्पन्न न थेरा होय अने अनंतवार भर्ती न होय.' अठवे पांचमे हेवेऽक्त तो जो आष्टु अनेक वार नव आवी हुये. अत्यारे के ग्रन्थाती दृष्ट्यामां आवी छे ते तो नवसासा भवमां विशुद्ध दृष्टि आप थया पशीना गोटा गोटा ज्ञानी नोप लगानी शब्दवामां आवी छे अते ते अत्यु भाईतो गोटा गोटा छवास ज्ञानी वात अन छी छे अने तेनी पूर्णता सत्तावीशमा भवमां आवशी, पूर्ण ए सत्तावाश भवमां के जे रथानडे ए जाय छे त्यां त्यां ए अनेक वार ज्ञ आल्यो हेवानामी सामान्यतः क्षमावाना छे.

ए सत्तावीश भव उपर्यान पूर्ण अना नाना नाना तो अनेक भव छी आवेल के. आ आप्य संसाराक्तो समान्य अप्याल दृष्ट्यामां आवे लाई आ आष्टी रेंटासा अन्वी शीते शोदावालवी देवाय छे के अभ्यां प्राष्टु उपर नीचे आवे जाव छे. जोक धर्मिक आली थाव आवे त्यां भीज भवय छे अने ए शीते ज्ञान धावावतो जाय छे अने नना अरतो जाय छे अने अप्येक श्वाने ए नवी नवी नामो. उपनामो धारण्य ही रख्दै छे, आदा नारे के अने हेवेऽक्ती इत्यु छे. जीमा ए अध्यमामा अध्यम श्वाने जाय छे, होष्ठ वार गोटी पद्मी पाय गामे के, होष्ठ वार नोष्ठ थाय छे अने होष्ठ वार शीष थाय के, मनुष्य भर्ती अद्य, आय, लेस थाय छे अने हेवेऽक्त ज्ञेन्द्रिय सुखी पहुंची जाय छे. त्यां रुदो प्रसे थर्तु जाय तो आशय वामी जाय छे, पूर्ण आ प्रमाणु अने अतिमा रप्ताती-इतीतो ए उपर नामे थर्तु जाय छे अने अनेक नामो. उपनामो, चेता नामो आने फुलालगुना नामो धारण्य ही ए रप्ताती जाय दै छे. ए उपर वार शीषी वासना होते तो जीवी अप्तिं श्वाने छे, पूर्ण ए वासना अर्थ वसनानी छे, पौद्गविक छे, भाव भवशावर्यगता छे. जीमा एवुं होष्ठ वार नहिं, जाव जुही चैतन्ये ज्येष्ठायामी

१३८ (१८) कल्प

[१५६]

श्री वद्वान्-भद्राचारि

(१६)

न आवे, एतो पुद्गत स्थानो संभव समवाया
न आवे, एतो व्यासवद्वे ज्ञानाभिते एतो संभव
हृ करनानी अवस्थी साची तालावेली न जगे तां
सुधी सर्व फँक्क छे. उथामा छे, आजी डेण छे, निर-
श्वक दप्पउपाया छे.

“ जोड्ये भरियितो श्रव पाचमा देवलोड भीज
वपत आव्यो। तेमां हाँ तरवध पामातुं नयो,
अगुणि आणतपे कारणे डे निर्गंधे कर्तीते तां
अनेक वार अनी गणेव हड्ये जेट्ये यक्षभमण्यामा नयो
तेवा क्रांक गति कृष्ण अक्षी न राख्या नयो, तां
पठी ए चाचमा देवलोडमां भीज वार उत्पत थाय
जे वात आश्वर्य दिपन करे तेवी नयो. यहु लाऊ
नक्करे आ आभी दप्पउपायीते समज्जने ज्ञानाभी
केवा नेवी छे अने तेन तरह ले दरेपत्रो अशुगमो
धर्यो हाँ तो अटकवाना रक्ता लाय करना
जेवा अत्यारे अवसर से.

“ आ भरियितो उपते गेतानी शुद्धिष्ठ छागाभी
दप्पेव निर्दीना दर्शनन्दी अनुराग प्रगट यत्न त्यार
पठी छ वर्त सुधी अने पवित्राङ्कपूर्ण आम थयु.
जुँगा उपरना अवे: दीशिक (१) मुष्पमित (१)
आम-मुष्पित (१) अनिरुद्धित (१०) आद्वान (१२)
अने त्यावर (१४) आ द्वीपत पर्यो संस्कृते केवल
काण सुधी पहेंचे छ अने आशुगिने केलो हेवन करे
छे अने केवा केवा आकारे दप्पावे छे तेवी ख्याल
आवे छ अने अनश्वभयामा करेकी एक रम्भना
केवा हार्षकाण सुधी गेतानी असर येचे छे तेवा
पञ्च हिसार्ह हेवाडे छे. आटवा माटे संक्षार उपर
ध्यान आपवानी जळू छे अने तेन सुधावावा माटे
लक्ष्य आपवाना उद्देशी ज आ चरित निर्दीना थाय
छे. आ संक्षारनी नक्करे वात थध, नीच गेतानो
उद्ध आ द्वेष भवमां थयो. वाचकना फुणमां अवतार
थया अर्ता छलु ए कर्म गेतानो आव भवव्या
कर्मातुं छे ते आगण जेवामां आवरी. आवा एक
एक वपते द्वेष अविभानी दण्पत-परा केवा नमे
छे, केवली लाऊ आवे छे अने केवा केवा परिष्युग्मो
नीपरमे छे ते पर झूँख विचार करवा जेवो छे.

आ रीते एकद्वे अीज धन्दियना चिपयो। पर
ठीक हीक कायू हेवा अनां संक्षारना थये अने
भगारी नामेवा प्रजतिपथने परिष्युग्मे भरीयिते
हेत्वी यातना यर्ह ते आस ध्यान आपदा लाप्य
द्वीपत छे. पांचमा देवलोडमां आ वपते एतु
भवधम आयुष्य थयेव हेत्व नव साजेपम काण आयुष्य.
त्या एकु अगुणिना भाइक लहेंद तो की, पञ्च अंते
ए वहेनो छेतो आव्यो, अने ए अगुणिना गर-
गुण नगरमां आव्यो. आवी रीते एतो दप्पउपाय
चालु रही.

ऐना भव शशुतरीमा आव्या, ए नयसारना
भवमा विशुद्ध दृष्टि पाच्या त्यापेक्षी जे आ सातमी
वपत देवलिमां आव्या (ज्ञान नं २: ४, ७,
११, १३, अने १५) स्थुग मुष्पमां आनंद भान-
नाराने देवलिमां मेज अने विवास लागे, आही
जे अनंत आतिमिक आनंद भरभावनो संभव
झट्टा अने सर्व कर्मी भुजित गता थाय छे अने
जे आनंदहो छेतो नयो, ऐना बोगती पाच्या
नवाने दप्पाव्यक्त के ऐना परिष्युग्मो नयो अने ए
आनंद अव्याध छे तेवी तो आ देवगतिना आनंद
साथे सरभामण्य पञ्च करी शक्य तेव नयो.

नयसारना भगति पंथमा छलु त्यागबाबी आव्या
रेहेकी छे एट्यें ए संसारमा आवे छे, मनुष्य
जेहे त्यारे पञ्च अने त्यागनी धर्या रक्षा करे छे,
पञ्च साची त्याग देवा हाँ तेवी तेवे छलु गम
परी नयी एकले ए उपर उपरना त्यागमा मेही
लय एने देवगतिना सुषेदा ए त्यागने परिष्युग्मे
भोगती आवे छे, पञ्च पाचा रम्भपायीते रस्ते
यदी लय छे. आ आप्या आवागमन, विसर्जने
अने देवधाम पाच्या अह विचार करवा जेवी
द्वीपत ग्राम थध छे, वात यो छे कै-त्यागने त्याग-
तीक समज, एती पाच्याना धेयने लक्ष्यमां राखी,
त्यागने रवपर विवेचनना परिष्युग्मे. स्तीकार्यामा
आवे तो पूर्णधृष्ट परिष्युग्म आवे छे. आजी देह-
कृष्ट के उपर उपरनो त्याग वंध नयी ज तो पञ्च
आतिमिक अनंत सुखनी अपेक्षाये एतो जरा पञ्च

(७०)

श्री ज्ञेन धर्म प्रकाश

[चैत्र]

उपरोक्त नथी, रभुपारी अने अटिंडेशा याकु रहे त्वा सुधी एनो सांगो अर्थ नथी. आ सर्व विचारणा पांसा अलोकमा ऐडा ऐडा नयसारना लजे. कही एटवे हवे एना प्रगतिसार्थी मोटा फैरफैर थो. एना परिणामे डेवा आवां तेना रक्षण अद्य लजे. आपां विचारणा अने साथे तेनी. अंहना रुद्धने अने. कर्मप्रियाम् राजना. कर्मवाहीना प्रवाह अने प्रेसा खल खानामा लहजो.

राजगृहीम् विश्वभूति (१६)

चौमां अर्थां जे राजगृह नयसारां रथवर आज्ञानुना नाम नीचे संसारवदार व्याप्तये होता अने छेवट विहारो जेथा लक्ष मठ ज्ञानी होता ते ज राजगृह नयसारो नयसारो अव वाचामा देव लोकी अने छे अने त्वा नवीन प्रकाशां पराइमा डेवी नमाना. जेग्वे छे अे वात पर हवे अज्ञेय.

आ सोणमा अवनी क्षीत वाचतां एक ए वात. तो ज्ञान आनां राजवा ऐवे छे. नीच गोत्र कर्मनी असर तो हङ्गु याकु दही, एटवे अे गमे ते संर्थिजनमा ज्ञ लां अने झीता क्षणी अने गोते मुख्य रथने नहेता आवाता ते आपां अवारसुधी नेता आव्या छीजे. ए हद्या आ सोणमा अवनी पर्यु याकु रहेवानी छे ओ लक्ष्यमां रहे अने नयसारना अवयो आगण वाताने एवांगे पोतातु व्यक्तित्व रथपावानी वाताने मुख्यता ते वात पर्यु ध्यानां राजवा जीवी छे. भराची तरीके एना परगा उपानहु के माया उपर अब के लायमां क्षम उपानी पाण्या एम्हु रथान हङ्गु, एम्ही धीन्यथी तरी आवानी त्रिती होती, एम्हो आगण आवानी होंस होती. आ व्यक्तित्व रथापन पाण्या ज्ञानीविकार होते, जिंडी जींडी. क्षायदृष्टि होती. आ वात पर्यु हङ्गु डेट्सी अनी रहे छे अने एमाना अविनते समजवासां डेट्सी. उपरोक्ता द्विसो पूर्वो पाडे छे अे विचारवा ज्ञेतु छे. अने आ मतोविकारोमां आगण ज्ञाना डेवा फैर-

१ द्विरोधपाठ छे अने तेनी पाण्या डेवी लक्ष्यता लरेली छे तेनी अभाव क्षता आभा व्यक्तिमुखमां प्राणी अयो इक्षाय छे, डेवा इक्षाय छे अने ए इक्षामध्ये ना भागोयांथी भदार नीक्षणवाता रसना डेव मैग्वी

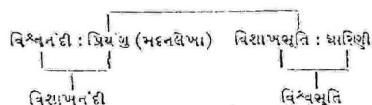
छेके छे, अे क्षाये भजे छे वज्रे विचारता आपा संसार पर्यटनी यावी प्राप्त यथ तेम हो. आपां आ दृष्टिं पूर्वज्ञोनो अन्यास परिणामवाह अने महासविवानी नजरे क्षीजे.

राजगृही नवीनी ते वधते विश्वनंदी नामे शन राजन करतो होतो. अे दातार होतो, सौभ्य होतो, आनंदी होतो, प्रग्नात्रिय होतो अने पोताना रथन उपर प्रेम राजना होतो. एने प्रियं गु नामनी महाराजाथी एक पुत्र थो. होतो तेनु नाम विश्वाप्यनंदी. महाराजी एक पुत्र गुरु नाम डाई रथानके महालेखा तराक भवावामा आव्यु छे.

आ विश्वनंदी महाराजाने अथंत प्रिय विश्वाप्यभूति नामे धुनक्ष नामोक्ष होतो. अने भाइजानो अवरप्रस धेणु सारो सुमेह होतो, जेहे होतो अने एने अवनत प्रेम होतो, धारिष्यी नामनी अथंत शुश्रूसावती पती होती.

आ होवी धारिष्यीनी द्वे नयसारो अव पुत्र पर्यु उपतन थो. विश्वभूति तेनु नाम पादामां आव्यु. आ वधते राजकुमारा आदवातु थयु, जिक्षुक दुग्माथी क्षनिय दुग्मां आदवातु थयु, तो यां पर्यु एते सुवराजनु रथान न मणता ए राजना नामावाहिनी पुत्र थयो तेना. गोत्र कर्मनी अंगे धीन्यता आपां एकत्र रथिती अथा होती एम लक्ष्य वाताने रहे तेम नथी. आ विश्वभूति ए सारो अक्षयास छीजो. अनुक्तमे योवन प्राप्त यतां एना लक्ष्य थया. ए अक्षयासी अने विवासी अवडो होतो, पर्यु एनी वृति विष्यो तरक अहु याप्तना वाप्तवी नहेती. ए भोजभाज करतो ता ते पोताना रथानोने रथ राजवा भाई करतो, पर्यु एनो मनामां अंदर अंदर विष्यो तरक अप्रेम न होतो. अने तेम ज्ञाना ए इक्ष संसारी परामुख पर्यु थयो न होतो.*

* राजगृहना राजदृष्टु वृथवक्ष नीचे प्रसादेषु धाम.



અંક ૬]

શ્રી ચર્ચામાન-ગહાદીર

(૭૧)

જ્ઞાનનીતા જુદી કાળમાં એક વખત આ વિષ્ણુપુરુષમાં પોતાની પત્રીએ સાથે પુષ્પકરંક વસ્તુના ઉદ્ઘાનમાં વસ્તું હૃદા કરવા ગયો. રાજું ગુદ નગરની આ સાગરમાં સારી શોકતી આપર્ણિક, જરૂરા હતી. એ અગ્રીયામાં અશોક અને આંશના ફૂલો મેટી સંખ્યામાં હોયા ઉપરાત એ જાણું, જાણીર, અનુરૂપ, અનન્ત, નાણિયેરી, ઇલ્લસ, પાટિર, અને કપૂર, પીલુ, નિંબ, આંસલી વગેરે અનેડ ગતિના વૃક્ષાશી અને ફૂલના હડો. તથા રોપાંગોથી બરેદો હોયા. એને વિરદ્ધાર ધર્મા ચોરો હતો. એમાં દ્રાક્ષામાં આગમનથાનો, કૃત્યાંગો, શીતળુદો અને વેલાથી આચળાફિત મંડળો દમદામ ગોડેવો હતો અને વચ્ચે વાદ્યાઓ, દરતાંગો અને આગમનથાનો શોચ સરસ રિતે થોનાંથા હતા કે અર ડિનાંથાં પણ, એમાં આગમ મળે, ગરમીનું નામ પણ ન હેખાય અને લીલા વનસપથી ચાંખને ઢંગ મળે, એમાં મેર, અર્પણા અને ડોયલના રફુલ આપો વખત થયા ફરતા હતા અને એમાં વચ્ચે વચ્ચે જગ્યાસ્થાનો એનો સુધુડ રીતે થોનાંથા હતો કે એમાં સ્તનાં કરતા માલસ થડ નહિ. મેઝાં ચાંપા લાઈ સુધુ માલસની સૂધું અને આજુ મહેંક મહેંક કરી રહી હતી અને સ્વર્ણમાંથી નંદનનન પુછને પર જીતરી આન્ધુ હોય એવી એની શોલા અની હતી. ઇથી ફૂલ વનસપથ અને હીંડસ્થાનોથી બરેદા અને જ્યાનાંદ અને એવા પક્ષીઓથી કષણે શાંતિ આપે એવા એ અગ્રીયામાં વચ્ચે વાસસ્થાન હતું. મોદા વિસ્તારમાં પથરાપેદો અગ્રીયો સુરક્ષિત હતો અને રાજગુહ નગરની શોલા-રફ હોઈ નાક રથને હતો.

આવા પુષ્પકરંક અગ્રીયામાં એક વસ્તું મંતુમાં પોતાની પત્રીએ સાથે નથારે વિષ્ણુનિ કુમાર

આપો ત્યારે તેની છંગળ તાં આનંદે કરવાની અને વચ્ચેતસ્તુતુ તાં ગાળવાની હતી. એણે તો ઉદ્ઘાનની લીલા બેચામાં પોતાની પત્રીએ સાથે કલોલ આપો. શાજકંદની પત્રીએ તાં રસો આર્દ્ધી, પૂર્ણ પ્રમાણો અમણો શરૂ કરી હીથા અને શાનતાન તેમજ આનંદમાં વખત પસાર કરવા માંયો. ઉદ્ઘાનને ડેડ એક સરોવર હતું, એમાં એણે પૂર્ણ જ જગતીડા કરી. તલથુરીઓ એ સરોવરમાં પૂર્ણ આનંદીથી સ્તનાં હર્યાં, એક બીલને ખડક મારી હીંડ કરી, અને વિષ્ણુનિએ એ હીંડમાં મધ્યમસર ભાગ પણ હીંડિયા. આપો દ્વારા આવો જીતે હરરૂફિયું અને ગાંધું-સંકિયું અને જગતીડા કરવો, રસો જોવા, ગર્ભાં સંબળવા અને આતુર્પાતું, શ્રાપાં શેરંજ વેલવા અને હૂંટ રઘુનામાં ધર્માભરો વખત પસાર થતો હતો. આ લુંબનમાં જાણે ડેંપણ પ્રકાનની ચિંતા છે નહિ એની રીતે દોધુદુક પહેલના જોવા. આનંદનાં નેન્દ્ર અને અને જાણે એ ગેરેલા જો ઉદ્ઘાનમાં વિષ્ણુનિ સર્વની સાથે ભાગ દેતો હતો, પણ એનામાં આસક્તિ ભાગન, ન હોતો. પંચત્વાં એ સર્વ સર્સીડાના ભણી જાતો, પણ એને હાડ હાડ મનમાં આ વિષ્ણુસુખ તરફ આપુંથી નહેતું જરૂર આપ આનંદો એ અધિકતા. હતો. એટલે રસ્કાંગ થયા દેવો નહેતો, પણ એના અંતરમાંને જરૂર સંક્રિયા પામતો અને ડેંપ પણ વખત એવી વિષ્ણો સાથે તાદાત્મ્ય સંબંધ કરતો નહિ. (ચાચુ)

૨૪૦ મૌહિતક

x. હોણુંદા દેવો જોવા સુધી હોણું છે કે એને આપો વખત ઈદ્દિયતા વિષ્ણો. જોખવાના મણે છે અને વખત અંતરે જોગ જોગાયે લય છે.. જીવાનો, ધર્માનો કે કલાનોના હોછ પ્રસંગ એને આવતો નથી અને વ્યવહાર દર્શિયે આ ચાદુ સુખ અનુભવે છે.

સામાયિકમાં
વંચવા મારે

ઉપાધ્યાય શ્રી પણેનિકાળ મદારાજનો સર્વક્રીષ્ટ અથ
જ્ઞાનસાર-યુગરાતી અનુનાદ સાથે અવસ્થય વંચો.
મુદ્ય દૃપિયા ૨-૦-૦ લાખો:- શ્રી લૈન ક્ર. પ્ર. સ.-કાવનગર

समुद्र-वहाणु संवाद

लेखकः (३) लेखकः-पूर्वविजय गणिवर्धन

सागरे उत्तर आयो कै-हे वहाणु ! हुं जगतमां पवित्र तीर्थ क्षेत्रात् हुं ते तने अथव छें, हमारो नदीओ भने आवामे भजे छे, हन्तर नदी घोड़ आजु अने अह आजु हुं-तमां भावो ग्रन्थाव वहु छे. अंगा बोइरे पवित्र नदीओ मारो समागम चाहे छे: के रस्ते हुं-तमें भणु छे ते रथण पथु अग्रासाग्र-समाग्रम् इप तीर्थ यथु छे अने त्यां टोणे टोणा मानो लोडो भेणा याय छे, माटे हुं भद्रान् हुं-आम ऐ हुद्धामां साजरे हहुं तेना उत्तर छ हुद्धामां वहाणु अपे छे-हे सागर । तमासं तीरथ पथु नेयु. हवे ए वात न काढी लेता तो सारी, आजी तमास समाग्रमथी, नदीओ पोतानी भीकाश गृहामाई हे छे, रंगतो ने रंगतो जीजानी गंगा अपादि नदीओ तमते भगवां आये छे पथ तमासी आग्रास्थी तेओ तेमुं नाम पथु गृहामाई भेसे छे, हुर्वन्नना समाग्रमधी संकलनतुं नाम लय. अथवा भेणा पूर्वी उत्तरी ठेचानां ग्रन्थाव. दाहने हूर कै, तरसने हैर-अने भेलने धोये अमे नथु अर्थ जेमो लायु पडे ते 'तीर्थ क्षेत्राव-पथु आ नष्टमायी एहो अर्थ तमासामा वायु पडतो नयी. तमासाथी किलो शाफ वधे छे, तरस छटानी तो वात ज न क्षवा अने भेल तो न होय तो पथु जीवी लय एवो तमासी समाग्रम छे, 'तारे ए तीर्थ क्षेत्राव' ऐ अर्थौ ए अरेपरो नियारीजे तो अंगम तीर्थस्त्रिय साकुषीया पथु पार उत्तराव मारे भावी आहु पडके छे. आजी एम ते एम तमासी आशेतो ले तो तमे तेने सीधे-सीधा लागो वहोवाही घो-हुआडी लो. लोडो तमते धूरु छे अभां तमासं महत्व नयी, लोडोने गरवत छे भाटे तमते धूरु छे. जगतमां गरवते विवादे पथु आप क्षेत्रो पडे छे.

ज्ञातभी दालमां शहज्ञातमां वहाणुनो ज्वलाय अपातां सागर कडे छे डै-वहाणु ! हुं ज्वलताना लोडो डिपर डैटो उपकार कर्सं हुं ए तने शुं हहुं हुं आदी पासेथो लहाने भेव पाहु वर्सासे छे, पाहुकुमी

जगत, जुवे छे, वनराज नवपत्वन थाय छे, वाव, झेवा-ने भरोवर लगाई लय छे, झरण्याई वहे छे, शोक सर्वं ज्ञासरी लय छे, 'भेदो' डेकार्व 'करतां ननाची 'होडे' छे, पाणी अने अनाजनी संपत्तियो जगतना सर्वं काँची सिद्ध थाय छे. मोरा पाणीतडे तो तारी उत्तरि पथ छे अने एने संसारी मात-भां विचारीन असे तने तारीमे धाओ, हे अविनामो ! शुण्यनिधन-भोटा भाजुसो थोडा पणु संसारं भूतावा नयी. तारी ऊर्ध्वमत हुं सहन कर्सं हुं तुं कर्त्तव्य वर्तन वहे डै-पथु छेसं क्षेत्रे थाय पथु ताव ते अवगुण गथना नयी.

वदाणु हहुं कै-हे सागर, संकल्प, तमे हहुं कै हुं भेधने ज्ञान आपुं हुं अने ते भूर्से छे पथ ए वात तहन येदी छे-तमे आयो छा एम नहिं झुन्नेन्ना आवेशीयो जग्नना इरते भेव तमासी पाणी धूर्वावा ले छे, तमासं लेर तेनी पासे आह चालतुं नयी. हंजूस माजुस्तुं धन राम एंची ले अने इंजूस एम कडे उंमे शन हीं पुष्टु धूर्वावा ज्ञाना लेवा तमासी वात छे, नहिं तो तमासी अने भेधने चाचो एम होय तो भेव जीवो एडे छे, त्यारे लमे ज्ञान ला शा भारे ? तमे एम हेव डेम धोये छो ? भेव जाने छे अने विनामी अभेद छे त्यारे तमे ज्ञान-प्रभागी लवाहे, आरे तरह भाव भालोप्रे छा, अने भोटा भोटा भोटा उठागाने जावे क्षाक जाभी आडे, रेव ए भेव भावे अहु पाणी लाई बेव एम विचारी छा. वणी तमासं पाणी के वादा ज्ञार्हे छे तो अभुत ज्ञेतुं भाहुं होय छे-ए अधि शुण भेधनो छे एमा तमारे गर्व लेवा जेवुं हुं छे ? जगतमां धब्बा ग्राहाना शुणो होय छे तमा ते जिभावी जन्म्या ते चीजने अलिमान छवा केतुं क्षाई नयी. धास अधने गाय द्वाव आपे छे तमा वासने शुं ? श्वातिनक्षत्रवृं पाणी सापना भोटा पडे तो डेर थाय अने धोपता पडे तो जीती थाय एम आसं पाणी पाणु शीहुं धरीने भेव होपां

સહેદરનો વાર્તાલાય

લેખક : શ્રી મેધનલાલ રીપચંડ ચૈકડી

શરીર આઈ, મારી પ્રતિદ્વા પૂર્ણું થાકું છે, હવે
હું સંપ્રેષણ પણે સંપ્રેષણ માણું છું, બ્રહ્મલક્ષ્મી મધ્યે,
દાને અતુલભી આપ પહુંચવી એ અનુગ્રહ ધર્મજીનું છું.

વર્ષમાટ, માતાના અનુભૂમિ રેલેને આત્મ જ્યારે
તે ગર્ભના નાણા રખ્યા પ્રતિદ્વા કરેલી ડે-માતા-પિતાની
હૈયાતિમાં મારે દાદ્યા ગ્રદ્ધ ન કરવાં અને એ શરીર-
ગ્રદ્ધ ઉક્ખ જતો તું આત્મા જહીથી જેના
પાદનમાં અન્યેકદ્વારા ઘરે એવો ઘ્યાસ મને કઠ રહે
આવી શકે ભલા ?

તે ઉભ્યના પંચતથી હજુ મારા હૃત્યમાં
ઉદ્ભાવેલ હુંઘ હેઠ પડેલ તાન ધા જેણું છે.
એ વેળા તારી આ જતની માણસી એ ધાર્મા મીંહું
અભિજ્ઞતા જેના દેખાય, શેખ્યા મારું હર્દ વધ્યના

વર્ષસે છે. એ પાણી મેવ પરસ્યાચે છે તે તો જગતને
શ્રીપત્ર છે અને તમારું પાણી જ્યાં જાય છે ત્યાં
તો આજોયાય થઈ જાય છે અને તે કુમિ ઉપર
જાણાય છે. એ આર્યાટાં વાચેનું પણ અદ્યું જાય
છે. જ્યથી હારેલા ફીરી જોગે ડે પણ જારે દાઢીયા
કઢી ફ્રાગના નથી. તમે ધ્યાનન્ય અને ધારસના મણ
કંદળી નાયો છો અને અથથે ઘાર આર હરી મુઢો
છો. તમારે દેર ઉછ્યો હોલ તે સિવાયના ક્રિદ્ધને
પણ એ રથન માટેક આવતું નથી. કશવદ્ધ અને
કોરડા એ અને જડ કેવાય છે, બિંંતામણ્ય અને
કાંકડો એ અને પત્થર ગણાય છે. અદ્યાતું અને
ગાયતું એ અને હું છે, પણ હેર ધણો છે. જેમાં
તમારું પાણી અને મેઘતું પાણી કલે પાણી કલે-
વાય પણ હેર ધણો છે. નામના અરભાપથ્યાચી જ્યાા-
વામા પહ્યા જેણું નથી. પોતાનું સ્વરૂપ વિશ્વાતું
નેખો. હું વાગ્યાના પાણીથી જર્ન્યો છું અને તેના
વરસાદે વહુ હું-જું છું લાં સુંદી તેના શુથને

પણે. આવા સમગ્રે તો મારી સાથમાં રહી આજા-
સન આપવાનું હોય.

મોદા બાઈ, સોનથી ઉદ્યગશૈકી આપની વાણી
બ્રહ્માદર્શિએ હેઠી હેવ જેનો ન ગણાય, પણ
નિશ્ચ દાખિએ જ્યારે મારે આ હેઠ પણ પોતાનો નથી,
પણડો છે અચ્યાત્ત આત્માથી એ પર છે, ત્યાં
પણ બીજી રોલદર્શી વળગણોની વાત વિશ્વાસનો
જી અર્થ ? જાતી ભણવાંતોની વાણી આપથી
અનાથી ન જ હોછ શકે ! ‘એસોઝે નહિય મે કોઈ’
એ ટંકાણા વચન, ડેના ડોર, ડેના વાચસ,
ડેના માય ને આપ; અતિધ્યે જરું અથ એકચું,
સાથે પુન ને પાપ-એ સ્વાધ્યાત્મની લીધીઓ, વધુ
વિનારી, હું અવિતારી, અથ હથ ધર્મા નિવારી,
વધુ સંગ જય હું નિડાસી, તથ હમ શિવદા વાસી.

નિશ્ચરતો નથી તમને તો મેં જ્યાંમાર્યાં પણ જેણા
નથી. જ્યાં જેણાનું એ અનુયું નથી લાં અમારા ઉપર
તમે ઉપકાર કર્યો છે એ કથાચી સાંભવે એ ? તમે વાદળને
તે તમારી જતના ગથાચે છા એ સાંભળી અમને
ધાણ જ આશ્ર્ય જાય છે. નિશ્ચિય ભાયુસ ગુણવત્તને
નેચુંને હેર કંને અભારી જતના છે તો તો જગત-
માં જેણા ભલા છે તે સર્વ તમારા તાત ગણુંને
ને ? કોણ ના પાડ છે. પાણીઓ અમે તેરીએ છીએ
તો આમારો તરસનો સ્વભાવ છે એથી-તમે અમને
તરબા ધો છો એ જે વાતસાં કાંઈ સાર નથી. ગાઢા
નાચે હુતરં આદે ને માને કે અરે લાઇને આ ગાંડ
યાદે છે એના જેણું એ છે ને તમારે ગર્દ રહ્યો
હોય અને તેને વ્યાજાચી માનવો હોય તો તમે
પથરતે તરબા ધો, ગુણુને સંખ્ય એક સાચો છે કે
કાજ જિના તે સરતો નથી. એ ગુણ ધરે છે અને
વિશ્વાસિમાન કરતો નથી તેનો સુધ્યા જગતમાં
વિસ્તાર પણે છે. એ પ્રમાણે વહાથના કથનમાં
સાતારી ઢાણ સમાપ્ત થય છે. (ચાલુ)

(७४)

श्री कैलाश धर्म प्रकाश

[चैत्र]

अदैवात्मे वित्तनवेणा हृष्यमाने रमती उपरनी कही—ओ
सर्वने क्यों सुधी उड़ैगी । शक्षय ?

प्रिय आधित, हुं पण भगवान् श्री गार्वेनाथना
शासनमां उच्छरेते। होवाथी उपरना वैशाख
वर्षयोथी माहितग्रह छुं, वजा और महाद्वन्द्वयुचित
तारो ज्ञन-म, ए पथ मारी ध्यान अदाइ नथी ज.
योवासमा तीर्थपति तरीकिने के ज्वामारी तारो शारे
आवानी के गो भाराथी अलगपी नथी. मारी मांगली
इंध क्रायमने माटे तो अहो रोकी यावानी नथी.
दूधपी सुधो तदहनो तारो उदासीन भाव भासायी
अन्नपदो नथी, अतो मारुं अंतरे पोकरे के हैं
जो माटोना निक्षमतानी पथ बलु आवी नथी. मारा
शारे आवी पैदेव आ संकटमां मारी नजर आगणो
तारो वसवान ए तप्त हृष्य पर शीता जगना
पांतशा लेवे नीवधो. मारो आगण ए कारणो ज ज.

‘ वीक्ष आता, आप क्या कारणो कहो छो के, ए
पण आवा नथी ? यारो हृष्यमाने यावानी गंधनो
भ्याव अन्यने क्याथी आवा शक्ष ?

अनुज ! ए कहेना पाण्ड मारो पासे विशिष्ट
जान तो नथी ज, पथ इक्कीक हवालो छे, अने
अवहारना काठ ए तोवानामा आवे तो लालाजाभनी
नजरे साच्छी हो तेम छे. ए पाण्ड सविधारो ‘ परो-
पकाताय सत्ता विभूतयः । इप नीतिक्षेत्राना टक्काणी
सूननो छे. अवहारनुं ए सून छे उप-विश क्षायाणा
पांखुये शक्षात् तो योनाना हुडूपीयोथी ज
हरवा घटे. एयो भाताने कक्षाणो के पितानी
पातने अबराईजी यादावी, त्याग पाण्ड लागी
छूटे छ ए लहे भासे के हीड कहे छे, पथ एमां
गोप्यी रवार्थनी गोप समायेही छे, वडिलोनो अवि-
नय पथु छे. वहेवारे भगत ए अपने सारे भानतुं
नथी ज. यानी भगवतो पथ अवहारने अवगाढ़ी
डेवण निष्क्षयना (उपर आर भूत) ! नथी. वजा वीतराग
दर्शन तो ‘ विनयमूले घमो ’ ए वसनने मुद्रायेण
भासे छे. ए एम न होत तो भगवत श्री अपवत्त-
देव सभिये अनन्दना द्वाक्षरानी अविक्षायाथी आवेद

धाहो अने सुंहरी शा भाए साथे हीक्षित न थात ?
भगवत्तराजनी आवा भाव धाहोने भगो एटहो ए
साथे जनी शक्षी, ज्ञारे वीक्षिती आगाना अवावे
सुंहराने ए वेणा थोकतुं पथुं. आवा उपरथी शुं
एं सार न तारनी शक्षय के हीक्षा ज्ञेव वित्त
धर्मनुं पातल धर्म निष्कानां व्यक्तिजो रक्तना
संभव्यी विद्येव रुद्धिक्षेत्री विद्याय राज्यपुरुषाथी
वहिने निष्कानुं लेहो. मारी समजन्य अवधत्ता
शासनमां हीक्षानो योशी भागर्ज आ ज होध शहे.
जो अक्षिने योगमाला लेवे वैशाख रंग मेहो हैव
जोने विमासांख न ज संखले. धराय थोकी विलाख
गण आजे तो पथ एयो एनुं कंध अगतुं नथी.
‘ भन अंख तो धरोटमो गंगा । नवा उक्ति अने
माटे मार्गदर्शक हैव. गोप पायमां पैदेव चंभभ-
ज्ञाने ए भानवी शक्षतो नथी. योनाना गदनी
संव्याप्त भरणावी शक्षतो नथी, ए जगत्तना अवेनो
शहनय देवी रीत अनी शक्षनो ?

लाल, मारी उपरनी वात गानदृष्टिये इक्षय
न टकी राडे तेवी होय तो पथ, ज्ञारे तमो सोहना
तंपुने अग्नि धरी. माता-पिताने ओहां न आवे
जो कारणे संसारमा रोकाया, तो मारे. लाल तरी-
झेत लेह, अग्नी सुहृद्धानानो ग्रेम, सौ. योहानो
हृष्ट अने यि. प्रियदर्शनानो गोप, थोड़ा समय
अहो रोकाए हृदयानुं कहे, जोना क्षुं क्षाय निष्क्षो
ज्ञापां शुं क्षुं शुं अभाव सर्वं माटे एटहो आवह
कर्तानो आवी हुं; अनी वेणो अमोने हृष्ट नथी ?
आ भानी प्रार्थना रक्त संभव्यी लेहोपेक्षी व्यक्ति
अवगाढ़े लां पक्षी गीज अने हृतकारै एमां शा नवाई ।

लेष्ट आधित, आप संभावा वहिलना आशीर्वद
देवा हूं आव्यो तारे आपे तो हीक्षेनो वरसाह
वरक्षाय्यो. हुं ज्ञारे आपते यारो मुख्यी भानुं
शुं त्यारे ए हीक्षेनो रहियो आवानी वात संख-
वानी ज नथी. हुं सारी रीत समज्ञुं शुं के अनी
रुद्धुरात भाण्ड मारा अरोनो एटांत लेह लेह
इरी रही छे. ।

अ०४६५]

संहेद्रियो वार्तालाप

(७५)

वला आप ऐ पथ समझ लो। के-भाई,
बहेत, पत्ती के पुरी प्रत्ये मने आर्क्षण्य नयी ज
गेहुं नथी। अलगता माझ आर्क्षण्यामां संसारी संसाध-
ना तात्पुरावाचाने रथाने आपाने क्षे. वला
के मार्ग हुं देवा भासुं हुं ते हारा जनकद्यावाचानो
प्रक अव्ययहे क्षे. जनकद्यावाचाने कुङ्गनीवलोनुं क्षेवाचु
आवा व नाय क्षे.

दृष्टीनन, जनकद्यावाचु अर्थे 'संसार तज्जनार
विकृतिने 'तीर्थ प्रवत्तन्ये' 'जीवी आर्थना क्षेव
क्षे, अर्दी जेहुं असुं होय तेहुं मार्दी नाशमां नथी.
आपुधशासामां चक्रेत्वं पेदा याय त्याए जेम चक्र-
वर्तीं छ आंड साधनार्थी नीट्को छे तेम तमों पथ
तीर्थंस्थापननो नाह बाने ताते निकामा पउनो. अमा
गाजतेवाजते तमते विद्याय आपीयुं'.

मार्द मन गोदारे क्षे के के विभूति जगत-
वस्तु अवा सद्गमाइ क्षे ते अवश्य भावतसल ने
कुङ्गनीवत्सल अर्थे ०८.

शब्दना तदीवर्धनी साधेना उपर प्रगाढेना
वार्तालाप पाणी था वर्धमानकृवरे अन्तरमां क्षेवा
विचारक्षा क्षी ते नोपायेवी मणती नयी, पथु ने
शब्दो नोपाया क्षे ते आ प्रमाणेण क्षे.

वीक्ष लाई क्षेवुं हुं ज्ञर् ए नर्द अदी थालीक्ष
पथु देवेय मान निभिते आपने अदी कंध पथु
आनपान के आरंभ-समारंभ क्षेवाप्युं नथी.
नाणे हुं वाचित्र मार्गनी अक्षवास क्षी रखो होइ
जेवा व श्रीते संसारना प्रसंगेयी अविताप्युं क्षे-

वनों छुं. मारो सगय माना बावा कार्यनी नियारशामां
व व्यतीत थवानो. मने धरमां गहव संयम मार्गनो
प्रेशाक गणुनो. आम छाँ हुं आपानो अने कुङ्गनी
जनोंनी वयमां व वस्तवानों छुं जेवे मारी नियत
क्षेवो भूमिकाने अवत्वत न पहेंचे जीवी श्रीते संसा-
रना संभवेत्वुं वगायथु तो। मने जेहो व, गांश आ
वस्तवारथी आप सर्वने पूर्व जेवो क्षेवो तो नयी
पहेंचानो छाँ थेहुं पथ अवत्वत भग्नुं होय.
तो मने शे श्वीकार्ये क्षे. मारो राह व्यवसित क्षे-
वामां ए अड्यायस्य नयी ज्ञ. मारे भत विडिनी
आद्वा शिरोधार्य क्षेवानो आनंद छे अने जगतना
ज्ञेये सामे हुं लविष्यमां ले वात क्षेवानो छुं, के
प्रक्षुप्तिक्ष शहुं क्षेवानो छुं जीमां कुङ्गनीजीमां हस्ता
सुपुण्डामी विद्याय संगीत पाया प्रना आरान्दि-
३४ अन्दे.

जेमना शासनमां आने आपेण सौ विचरी
द्वारा छीजे, अने जेमनो तत्पवातार्ये आने अभिव
विवेत्वुं ध्यान एच्युं क्षे, ए परमात्मा महानीर
हेवनी प्रवल्ला-कागवती दीक्षा क्षी भृत्यारथी
आरंभाधि होती जेनी कंधक ग्रामी आ वेषभां
जेवा मने तेम क्षे.

उपर वर्ष्यनी मादाशथी वर्ततो क्षेवतना भाग्नों
क्षेवु ए आजनी हुनिवामो अध्यमुक्ता रेत समान
क्षे. आ प्रकारना श्रमणा धारे तो इक्त एक्क ज
सारनाथ नर्दी पथु संज्याप्य सारनाथ छिक्षा
क्षी शहें. ए सारु ज्ञर् क्षे अनेकात दृष्टिनी.

अ॒र्थात्मकृपद्वय (श्री भगवान् जैन विद्यालय-प्रकाशन)

वेष्ट-२४० घैटिक

अरेखर व आत्मानी साची शांति चेतनी होय तो आ थंथ अवश्य वाच्या,
सुवर्ष्य सरीभा आ थंथुं निशेव वर्ष्यन शुं क्षेवुं आ ज्ञाथी आवृत्ति व तेनी
उपरोगिता जाहेव करे क्षे. याकुं हुक्क इक्कथ बाईठीग, सुन्दर लेक्के, कालिन आपां ऐल, ४८०
पृष्ठ छाँ मूल्य मात्र रु. ६-४-०

लोगो:- श्री जैनवर्मी प्रसारक समाज-काननगर.

જિનદર્શનની પૃથ્વા

જ્યોતિષ (૫) + જ્યોતિષ (૬)

ડા. ભગવાનદાસ મનુષુભાઈ મહેતા M. B. B. S.

આંધ જનેની બેદ કલ્પના અયુક્ત

વળી આ અંધજનોમાં ડ્રાઇ ચંદ વડા છે, ડ્રાઇ નાસો છે, ડ્રાઇ ચેરસ છે, એમ હુણી તેના બેદની પરિક્રમના કરે, તો તે પણ અયુક્ત છે, નીતિથી વિરુદ્ધ છે; કારણ કે એ ચંદે દીઠા જ નથી, તેના સ્વરૂપ સંખ્યા જગે તે કલ્પના કરવા તે કલ્પના જ છે, સત્ય નથી, તેમ જ્વાસુ જગે સર્વર્ગ આચ છે કે તેવા છે વગેરે તેના બેદસંખ્યા પરિક્રમના કરે, તો તે અયુક્ત છે, એહાંદું છે; કારણ કે એ સર્વજગે પોતે દીઠા જ નથી, તેના સાંખ્યી જગે તે કલ્પનાના થૈએ દ્વારાના તે મિથ્યા કલ્પનાસ્ય જ છે, સત્ય નથી, એ ચંદ પોતાને દેખાતો નથી, તે ચંદના વિવિધ બેદ કલ્પના, આધિગ્રાહી તે સંખ્યી જગડો કરે, તો તે તો ડેલ્ટાં અધું એહાંદું કહેલય ? તેમ એ સર્વર્ગ પોતે દીઠા નથી, એ સર્વર્ગ દર્શન ગતે હુણું નથી, તે અર્જનના અને સર્વર્ગ દર્શનના જ્ઞાન જ્ઞાન ભેદ કલ્પના, જ્વાસુ. તે બેદ સંખ્યા મિથ્યા વાદવિવાદ કરે, સામસામા પ્રતિસ્થિપ કરે, પરસ્પર અંગ ભાડનમાં ઉત્તરી પડે તે તો અયુક્ત અયુક્ત છે જ, એ ચા સર્વ ઉપર્થી દ્વારા થાય છે. અને હે ભગવન ! આપના દર્શનન્તરસિદ્ધ જન્માંબ મનુષોને* હાથીનું દાંસં ઘણું અંધેસંસું છે તે રમરણુંના આવે છે.

જન્માંબ મનુષો અને હાથીનું દાંસં

ડ્રાઇ એક સ્થળે હાથી આવ્યો, એને લેવા માટે છ જન્માંબ પુરસ્પે જથ્યા, તે આધિગ્રાહીએ હાથીને હાથ લગાડીને જોયો. એકના હાથમાં હાથીની ચંદ

* “પરમાગમસ્ય જીવં, વિવિદજાત્યાન્ધિતિસ્થુરવિવાનસુ । સકલનયવિલસિતાનાસુ, વિવોધસથને નસામ્યનેકાન્તમુ” ॥ —મહાર્થિ અમૃતચંદ્રચાર્ય જીહત પુરુષાર્થ લિનિદિપાય

આવી એટલે તેને હાથી સંખેદા જેવો લાંબો ભીજના હાથમાં દાંસં આવ્યું એટલે તેને તે હુણા જેવો લાંબો, નીળાના હાથમાં કાનું આવ્યો, એટલે તેને તે સુરપા જેવો લાંબો, ચોયાના હાથમાં પગ આવ્યો, એટલે તેને હાથી થાલદા જેવો જણાયો. પાચમાંના હાથમાં ઉદ્દ આવ્યું, એટલે તેને તે મશક જેવો જણાયો. ઇન્નાના હાથમાં પૂંજું આવ્યું, એટલે તેને તે સાવરણી જેવો જણાયો. આ ઉપરથી તેણેએ પેનપોતાનો ઝાંખેપ્રાય બાંધો, અને પણી એક પીળને જણાયો. પણી દ્વારા પેનપોતાના અભિપ્રાયમાં મફુમ હોધ, પોતે જ સાચો છે તે ભાકીના પીળ અથવા બોયા છે, એમ આચદ કરી પરસ્પર જગડો કરવા લગ્યા, મિથ્યા ચર્ચામાં ઉત્તરી પડ્યા, તે વધણા વધી પડી !

અનેકાન્ત ચુક્કિની સમાવન

ત્યા ડ્રાઇ એક દ્વારા મનુષ આવી આવ્યો અને તે ત્યાને નિવારીને જોણો કેચારે ! ભાલ માણુસે ! ચા તર્મે હોગઠ જગડો શા મા તેણે કરો છો ! તમે ભધાય જોડા છો અને તમે ભધાય ચાચા છો ! હોગઠ કે હાથી આવો જ છે એવા તમનો આચદ રૂપાંધ ત્યાને એદાય છે, અને અમૃત અંગી એપેક્ષાએ હાથી આવો છે એ શાત તમે સાચા છો. જુણો ! હાથીની ચંદનો આદર સંખેદા જેવો છે, દાંસંનો આચદ હુણા એવો છે, કાન સરપા જોણો છે, પગ થાલદા જેવા છે, પેટ મશક જેવું જાથ્યા છે અને પૂંજું ચાવરણી જેવું હેણાય છે. જોક એક અંગેને રસશેવાથી તગને હાથી તેવો લાંબો તે અંગની અપેક્ષાએ અચાનક છે, એથી તે ઉપરથી ડ્રાઇ આચા હાથીનો આચદ કોઈઓ જ આવે છે ! સમાચ અંગ મળાને હાથી બને છે, માટે તેવું સંગેપાં સ્વરૂપ આચદ સમજાતું જોઈએ, તમણે આચદર્થ

(अंक ६)

जिनदर्शनी तथा

(७७)

४ क्र० जेकांतवाद लाडी हवा लोड़के, जेम समझ
हवे तमरो जड़ो अधे करो ! अधे करो ! 'सङ्ग आपे
अहमेव' ती चेटा लाडी थो ! लाडी थो ! जेम ते
गाला . देखता-दृष्टि अनेकान्तवादी पुरुषे नियायी
सर्व समन्वयकारी अनेकांत युक्तियी समन्वया,
अटेसे ते वाहीओ यादा पड़ा ने निया चर्चा लाडी
है समझे शांत थाए।

सर्वसमन्वयकारी अनेकान्ती दृष्टि-दृष्टि-वेत्तन

आपना सिद्धांतवादित्वा दृष्टिताना उपतय
प्रभाष्ये हे जगवन्, सर्वसमन्वयकारी तयारा अनेकान्तवादी नहुं समान्य दर्शन पथ जेने थहुं छे ते
अनेकान्तवादी नियायी दृष्टि पुरुष छालू जेकांतवादी
आप्यायी भावाध जरोने सौभाग्यो समझये हो के-
बाइको ! तरो आ तमारे भलवानीला आयामो
निया अधे अधे करो ! अधे करो ! अधे करो ! 'सङ्ग^५
आपे अहमेव' ती चेटा लाडी थो ! लाडी थो !
कारण्यु के सर्व या आहि तिनिवर, अर्थाते नियाय
योगशान तियाय थतो नयो, अतीत्रिय तानयकी ज
तेनी सिद्धि थाय छे, अटदा। मारे अपे सर्वाध अने
सर्वान्वयकारी आपतमा अधे जेवा छालूचेना
नियायी थुं ? सर्व आहि नियाय अनानिय छे.
इत्रिय अने भनने अगोवर छे अपे भाव गोगी-
येने ज यानगम्य थाए शारे जेवा छे.

* येता पछ भावांयांसीरे रायकाना समस्त
अनेकान्तवादीहुं परम समर्थ निरक्षन करतुं संतरिशेऽप्यु
श्रीभद्र राज्यांशुल्लु यमतांसिंह शुभापित छे के-

जेकांतवाद जे ज शानां परमाध्यार्थी अनेकान्तवादी
वाहीओ ! भने तमारे भाटे हरीवे छे. कारण्य रिआउ
शविया शाव्यामो जेम तेम आमी दाखला 'ज' रायदोना
हृष्णेश एरे छे, तेम तर्म पथ 'ज' अटवे नियायता शिवांड
शानवडे क्षेष्ठा छो. भारो भावावार अम डोइ आणे क्षेष्ठ
नहिं; जे ज येनी सर्वविनी ऐडे यमतहृति छे.

—श्रीभद्र राज्यांशुल्लु परमां ६
× "निवेदोऽतीत्रियार्थस्य योगिज्ञावाहे न च ।

अतोऽयप्राप्यकल्पाना विवदेन न किंचन ॥"

—श्रीयोगदिस्त्रियमुख्य, श्लो. १४३

अतीत्रिय अर्थात्याप्ततमां अवसरमा

छालूचेना नियायी थुं ?

जे संभाधीयार्थ नियायी सक्षव निरुद्धयनी आप-
तमा छालूचेना अविप्राप्त नयो अने विवेषी तत्त्वो
नहिं हेखनारा जेवा ते छालूचेना अधे ज्ञाने जेवा होइ,
जे अमना अधिकार बहारना वियामा तत्त्वनिय
आपतमां तेजोना विवाद नक्षमो छे, तेजोनी अचानी
अचाया अहिकारक छे. कारण्य के ए परमु आप्ये
सामान्यपछे पथ देखता नयी, अल्पता नयी, तेना
स्वरूप आपत रुक्षांठे कृप्यना करी, भिद्या अगडे।
करो, निःसार वाचयुक्त करुं, वाद-प्रतिवाद करी
थृ॒ क विद्युतु॑, अङ्ग-भृत्यां परी विमनम् वसा-
रुं ते भूर्भूतां निशानी छे; चंद्राना आकाश विरे
अंधकारो छक्षपा जेतु॑ दक्ष्यारपद छे; पेला
आप्यायांगो जेम दाखीना स्वरूप आपत घेऊ टो
करता छता, तेना जेतु॑ झोग छे. तेना भिद्या विवा-
दी लाल थाने अद्ये बीवी दानि थाय छे, कारण्य
तेवो पोताना सत्त्वित्ताना नाश थवारप अनिष्ट
हृत नीपेन छे, अर्थात् सहस्राववागो चित्त आप्य
नष्ट थरु हृष्ट आप्य ज्ञ-मे छे, राजदेवाहि देवती
वृद्धि थाय छे, चित्ताने अशांति ने सक्षोभ उपरे छे.
आवा सत्त्वित्ताना नाश कृत्यां विवादु॑ सत्त्वजनोने
शु॑ प्रयोगन छे १ कृ॒ ज॒ नहिं, कृ॒ ज॒ नहिं,

उपसंहारः "अभिनंदन जिन दर्शन तरसिषे"

आम हे जिन भगवान् ! सामान्यपछे पथ के
दुर्लभ छे अने विवेषपछे सक्षव निरुद्धपछे तो
विवेष द्वाने हृष्ट छे, जेवा आ तमारा हृष्ट न
परते जेम अनेक प्रकारे विचारता भने अतीत आप
छे के आ भावाध भलवाहीयोनां विचारमा शोध
सारस्त तत्त्वनियतत्व नीक्षे जेन नयी, अने भावी
जिनदर्शनी तुषा छाये जेम नयी; अटेहे हे अभिन-
दन, मारी आ दर्शन तुषा आर वधती नय छे.
अने भावो अंतरामा क्षेष्ठ शेषे घोरे छे के-

अभिनंदन जिन दर्शन तरसिषे,

अभिनंदन जिन दर्शन तरसिषे,

(अपृष्ठु)

व्यवहार कौशलय
(३४)

आनंद राजदमां थेना थेना समावेश नवी थतो ? एमां भनुध्य आत्माना समावेश थाय, एमां हृदयविशुद्धि आवे छे, एमां प्रेमामा अने बहुतसोया आतःकरणनो समावेश थाय छे, एमां नअना अने उदासता आवे छे अने भीजन आणगभी तेनी युछ तेमां थाय छे अने थेताना नक्क मत पैता माटे होय छे.

तमे संतोषनी कृतिता तो जडू जूनी आण-पाठीमा वाची जले. संतोषनी सर्व प्राकारुः सुख होय छे. संतोषी भाषण प्रकल्पिते आरिमुक्त सुख अतुक्तवे छे. जेना संवेदना तहन शांत होय, प्रशम-कृतमा निमित्त थी देखाय छे. ज्ञाने कथारे अऽना आत्मानंही आणुने जुळो लारे तमने पाषु प्रकल्प वहन थाय छे. एमा संतोषनुः सुख तो प्राचावर होय छे, ए पौते राण रहे छे अने अना संतोषमां आवानार सर्वते राण राखे छे. अनी स्वकावनी उदासता गेट्की लारे होय छे के अनो चेप आणु-आणुला वातावरणमां ए लक्षी होय छे. ए लायक भाषु आनंही रहे छे अने संतोषमां आवानारे राण राखे छे, जेना वातावरणमां डाई पाषु जग्याकी कक्षाट के उक्तरेणी तमे लेतो के अनुक्तवशी नहि अने न्यारे जुओ तारे अनो हक्की चहेतो अनी आस-पास पाष अनंद अने गमत करावे छे. एवुँ भेदुँ पाष हस्तुँ होइ ए काईने इडुँ फेतो नवी अथवा कृत्वाट अना डाथ(डीक्शनेरी)मा ज नवी. ए तो ज्ञाना नव तां आनंद होइ अने भीजने आनंद होवे, एनामा आनंदुँ वातावरणुज भरेहुँ होय छे.

आनंदी भाषुसमां नरभता अने नम्रता होइ छे. अने थेतानी उमित पाष ज्ञाऊन होय छे अने पौतानी जलने ए कैध पर इसतो नवी. ए भीजनमा सारा गुण होय तेनी युज नाशे छे अने पौत: माटे नधमसरनो अविग्राह राखे छे. आवा आनंदी भाषुसनो भेटा थेवा अथवा तेवा साथे भिनता कट्टना ए पाष ज्ञेते तेने भणतुँ नवी. आपणा धनकृतग्य होय तो आवा भाषुसनो भेणाप थाय छे अथवा अनो परिचय थाय छे. जेवा भाषुसो सेसायटीना थांसक्ता अथवा होरवण्ही आपनार छे. कारब्य के तेना वगऱ संसार सूनो छे. ज्ञेम जेवा आनंदी भाषुस साथे संपूर्ण के संपूर्ण वधतो नव तेम तेम तेनामा रेल-युणे जग्कता लय छे अने आविता ज्ञाहे छे. तमने एवा च्वात्मानंही भाषुस साथे परिचय थाय तेवा प्रत्यंध इये अने तमादमा अतो ज्ञानपदो वशमर नोधा लो. आच ज्ञवन्ते इवनार आवा च्वात्मानंही भाषुसो छे अने एवा परिचयथा. तमे कृदी उत्तराशो नहि, पाष जिव्या वधारे आनंदी थेवा; माटे ज्ञेम अने तेम च्वात्मानंही साथे संपूर्ण सविवा. के दुश्य भाषुसो होय छे ते थेतानी उक्तणातामा वधारे करी आनंद होइ छे.

स्व. भौजिन्द्र

What indeed does not the word cheerfulness imply ? It means the contented spirit, it means a pure heart, it means a kind and loving disposition, it means humanity, it means a general appreciation of others and modest opinion of self.

—William Thackery

भाषुडेना ल्लवनामा
उत्तम संस्कारो
रेड्वा माटे

संस्कारनु वावेतर
वेषा :- श्री लैन धर्म प्रसारक संस्कार-भावनगर

अवश्य मंगावे
मृत्यु : चार आना

५० (७८)

पारिभाषिक शब्द-विवरण

पांच (पंच) संग्रहा
 सत्रांशु श्री गायत्रेलार्ष मात्रीयद्व वकील-सुरत

ધર્મભેદ-અર્થિંત, સિક્ખ, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય, સાનું,
પદાર્થ-પૃથ્વી, અપુ, તેજિ, વાસુ, આકાશ.
જાન-મતિ, જીવ, અવિજ્ઞ, મનપર્યામ, ક્રૈણજાન.
નભસ્કર-અર્થિંત, સિક્ખ, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય,
આધુ(ગ્રામે નભસ્કર) .

समिति-इर्पी, भाषा, व्येषणा, आदानप्रदान-
वैवेषणा, पारिषदाप्रतिक्रिया।
इद्वयो-ध्वाकुंड, व्यक्तुरिदि, श्रोतेरिदि, २५शोरिदि,
जिहवेरिदि, प्रतिक्रमण-हेवसि, राधा, पालिक, ओमाचिक, सतीत्सनिक
मोर्यां तीर्थी-शत्रुघ्न, गिरनार, आषु, सगेतशिखर, अष्टापद,

କଣ୍ଠୀଲୁଙ୍କ-ଅସ୍ତବ୍ଧ, ୦୨-୮, ଦିଲ୍ଲୀ, କେବଳଗାନ, ମୋକ୍ଷ-
ପାଂଡିଲ-ସୁଖପିଥ, ବିମ, ଅର୍ଜୁନ, ନକ୍ଷତ୍ର, ସହଦେଵ,
ମହାବିତ-ଅହିଚ୍ଛା, ଅଶ୍ରୁ, ଅଦ୍ଵାଦାନ, ଅକାଶ୍ୟ,
ଅପିଯାଦ.

અધમે-હિસા, જૂઝું, ચોરી, મૈથુન, પરિથ્રણ.
મોઢી તીથી-મુદ્વા પાંચમ, એ આઠમ, એ ચૌદશ (દરેક
મહિનાની).

આચાર-જીનિયાર, દ્વારાતાચાર, ચારિતાચાર, તથા-
આર વાર્ષિયાર

मेष्टक्षना साधने-शान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य.

पदार्थना धर्मी(वर्णो)-क्षण्ड, इप, रस, गंध, वर्षा.
धातु-सेनु, इमु, नाशु, पीतण, कासु.

अतराय-हानातराय, भोगांतराय, लाभांतराय,
ग्रानांतराय वीथौं तराय

वाणिज्य-दंत, लभ, रस, केश, विष (वाणिज्य)

કુમે-અગાર, વન, સાડી, ભાડી, હોડી (કુમે)

卷之四

सामान्य दर्भ-यं प्रणिष्ठा, निलष्टा, द्विन, सं-
शोषण, अस्तिप्रेष्य.
निशा-निदा, निदानिदा, प्रवता, प्रवता-प्रवता,
द्वतानिदि.
वासु-प्राण, अपान समान, उडान, अव्यान.
अलंकार उद्धृत स्वार्थायथ-वचना, पूर्णना, परा-
पर्तना, अप्रेष्टा, दर्भ-द्विन.

ଦିନ୍ୟ-କାଥି, ଥୋଇ, ଫର, ଆମ୍ବର, କଣ୍ଠର,
ଜୟେଷ୍ଠତିତୀ-ଚାନ୍ଦ, ସୂର୍ଯ୍ୟ, ଅଙ୍ଗ, ନକ୍ଷତ୍ର, ତାର,
ଆମଣାତୀ-ପ୍ରୟେମ, ତର୍ଜନୀ, ମୟେମ, ଅନାମିକା, ଫନିଷା,
ପଦ୍ମଵାନ-ଖାଲ, ଧିନ୍ୟ, ମୁତରହେଲୀ, ଲାହୁ, ପୁରୀ,
ପାତାଳ-ଶିଖ, ପାତାଳ, ପାତାଳପାତାଳ, ପାତାଳପାତାଳ

पंचाणी-सूत, निधुंडत, शीदा, चूर्ये, आध.
पंचमृत-हृष्ट, हड्डी, दी, साहर, पाथी (युवालक्षण)
दान-अखय, अनुकंपा, सूपात्र, उचित, कीति (दान)

સમકિતના હૃષણો-શંકા, કંખા, વિતિભિન્ના,

પરમતાની પ્રશ્નાંસા, મિથ્યામતીઓને પરિચય.
વિરુદ્ધ આચાર-ગ્રન્થ્ય, સમૃદ્ધાય, નીતિ, ધર્મ,
વ્યવહાર, (વિરુદ્ધ).

શરીર-ઔદાનિક, વૈકિય, આહારક, તેજસ, ક્ષમાણ.
સુમહિત-ઉપયામ. ક્ષયોપયામ આધ્યાત્મા

મોટો ઝૂઠો-કન્યાલીંડ, અવાદીંડ, ભૂમ્યલીંડ, ચાપણ-
સેંગે રીતિશાળા.

અધ્ય-માતા, પિતા, પત્ર, મિત્ર, કલિત

ନିଯଂଥ-ପୁଲାଙ୍କ, ଅନୁଶ, କୁରୀଳ, ନିଯଂଥ, ସନାତଙ୍କ

दलन-सेन्टु, भाष्णे, धीरा, नीलम, भेती,
दपण-सैधव, अित्यवय. संचय. टंक्षा. समझन् भी।

पंचांग श्रीपथ्याना-तिथि, वार, नक्षत्र, चोर, कुरुषु
सूत्रना भेदार-ग्रामा, भृद् वर्षा, संपत्ति आमोशान

४०८- वडार-गोपा, चैत, खु, सं पह, बासान्धास,
वर्ष्ण- शेत, नील, पीत, रक्त, हरित.

二〇

पुस्त को नी पहोंच

१ सर्वज्ञशतकम्—(प्रताकार) प्रकाशिका-श्री भीडाभाष्टि कल्याण्युद्देश्य कैन गेही-४५३वंज, संशोधक-
मुनिशाज श्री अहंसामन्त्रण अभिपूर्व, प्रताकार भाना २१४, मुहूर्त अमृतव, सकाने शेष नेमधंद अवध्युद्देश्य
आज्ञापुरावाला तद्विधी जेट मलेख छे.

आगमोऽप्ताक अथमाणाना प्रथम भयुद्धा तराइ महेषपांचाला श्री धर्मचारगण गणितविशिष्टित
स्वेष्यवर्तिवालो आ “ सर्वज्ञशतक ” नामो सुंदर अथ प्रताकारे प्रसिद्ध करवामां आवेद छे.
उपाध्याप्ति महाशेषान्त्रिमा विद्वाता अकाश्य हाती, तेऽयोध्यां प्रोतानी सुंदर छाताचो अनेक विद्वान्नानोंते
अथ भान्य गेता शीतीशी सर्वसंदेवतानी लगवांतने अंगे प्रवर्तनी विद्विव भांत भान्यताओंतुं सुंदर
शीते निरसन द्वारा उत्तरवार्तानी संभवी अनेक विद्योदय प्रतिपादन उद्देश छे. अथ उपरोगी अने लोकों-
पक्षाङ्क छे. आ अथ प्रकाशनमां सहायतामोनों, सहायतामोनों प्रेषणा छरनार मुनिवयोनों तेमन इक्षतिजित
प्रति मुख्य मापे आपनार मुनिशाज श्री नरेन्द्रसामन्त्रणों प्रयास अदानीय छे.

२ श्री अपानंदवन्दनानं भद्रा—(पद १ थी ५०) प्रकाशक :-श्री महावीर लैन विद्वालय—मुख्य
कैन आ॒ येण पृष्ठ ६००, पाँडु छावडालो अर्द्धांग, सुंदर जेट छाता भूय भान झिया साडा सात.

श्रीमुत मोतीचंद्रामां अपायीया अथमाणामां ग्रीवा भयुद्धा तराइ आ अपूर्व अथ प्रकट करवामां
आवेद छे. श्री महावीर लैन विद्वालय न्व. मोतीचंद्रामाना लेखा, अने आने अनुपवल्प अथाने प्रकाशन
करवानुं कार्य शब्द क्षु॑ छे ते अरेपर अभिन्दन तेगंत मशांसाने थाव छे. (१) श्री अज्ञामहेषद्वाम
(२) कैन दृष्टिये योग-यो ए प्रकाशना द्वारा आह आ नीरु॑ प्रकाशन सौ छातीं पसंह, पडे तेवु
तेमन आकर्षी दे. तेवु॑ छे.

न्व. मोतीचंद्रामाने न्व. प. श्री अंबीश्विन्युद्देश्य गणितवर भासे वर्षी पूर्वे आ पढाना अथों
अवधारेक, स्याद्वाद ते प्रयास भो आपाप्ती संभा मार्देत लापनवानों आवेद, भद्रा पर्तु॑ विनेयन थाँ-

लैनेना प्रकाश-अङ्कदि, लेईदि, तईदि, चारिदि, तिर्थ्यं वयोद्विय-४८४य, यणव, येथर, उर परी,
पद्येद्विय.

अनुसर विमान-ज्यंत, वैन्यंत, अपराजित, विन्य, पौखयनी सुख्य वस्तुओ-मुद्दपति, यद्यवणा,
सर्वर्थयसिद्ध.

अभिगम राजन्यो संभव्य-भूद्व, उन, उपानह, लगनना भांय साक्षीमा-देव, अनि, वेदामी
मुगट, चामर.

शिवायकगायो-इंभार, लुदार, चिन्द्रां, सुथार, (आवाम), सुर्व, पंच,

भक्त-मन, भास, भत्य, मुश, भैयुन. कामहेवना भाष्टो-अरनिंद, अशोक, चूत, नव-
भत्तिका, नीवेतपत,

पिता-ज्यन आपनार, उपनयन संरक्षर कैनार, भयमधी रक्षय कैनार, सख्तो (कन्याना आप), विनय-द्वान, सान, चारित्र, तप, औपचारिक,

हिंसा-२८३५, अनुभव, दव्य, भाव, भोग (हिंसा).

જ સરદા, સરદા તેમનું અસ્ત્રાસદને પરાં પડે તેવી શેરી હોલાધી બૈઠા જ ચંદ્રયાના તેવી નક્કેની ખરાકું
થઈ ગઈ. ફેલવા વાસેદ વર્ષથી તો આ અથ મણિનો ન હોતો અને મોહવાણને કાર્યાલ્ય તે પ્રાણરૂપ ચાલાસ
પણ થઈ રહતું નથતું. આપણી સમાની ચંમત્રિ વર્ણની શી મદાનાર કેન વિવાદથે આ પ્રકાશન છુટું છે.
એવી અભ્યર્થ ઘણા વચ્ચે ઘણા છતો મુખ્ય માર સુદૂરસત ઇન્દ્રિયા જી રાખવાના આવેલ છે.

શીંગર્ઝિઓન હેંસલંકની દુનિયે ગારી વિર્જિનન કસ્ટ્ટ તો સુખલોં ઉપર જોપ ચંદ્રયાન નેત્રું જ છે.
આ પણાસે ખેડો પર રસ શી મૌલીચંદ્રાલાલની શેરી સમાસ કરવાધી અન્ને અન ક્રેલ છે કે એક વાર પુરુષ
દ્વારાના લોલા પણી નાચે રૂધ્યાંતું મન થાપ નાંદ, વિર્યાના ઇંગ્રેજી ડે-રૂપ મૌલીચંદ્રાલાલનું એકાશવાતરની
સોંકડેસી આદી એ રૂધ્યાંતું વિવેચને લણેનું પણું છે તે પણ શી મંદેરોની ક્રેન વિવાદથી પ્રથાશિત કરી, તે
અંગ્રેટ કાલિને જનતાના અન્યે ધર્મની આપણિયા અથવા અસ્ત્રાનું અથ અગારી સમાનાથી પણ મળા રાફાની.

૩ શી. સેસેન્સાંધુ રદ્દાલ્લીનાની. સુઅહિયા પાંડિંડ વિવાદીનું વિશેપાંડ-પ્રકાશ-શી સવાર
લાચ અસ્ત્રાસત્તાદ શેડ, ગારાંસર શૃષ્ટ ૧૯૨૨. સચિન.

“એપી એપી સરેચાન લાચા એને કેંદ્રે ક્રેંડે પાણ અધ્યાત્મ” જો ક્રેંડેન, આ વિશેપાંડનું અચલેની
કરતા, ચંતાથી થાપ છે. નાનું રસરસુ ખીલ વણાં વિનાન વિટસુ પણે છે તેવી શરીર “એક જોક પાઈ”.
નું ભડાણ સમય રસાં કરતો વિકાસ સાથી. સાંદ્ર છે તેવું આ વિશેપાંડના સૂંદર શરીર રિંગર્નન કસાનું છે.
સુઅહિયા જાતિ આપણેષ્ટો પણત છે, તેને ક્રેંડેનાની વિશેપાંડના અનાવના ડિપરનું સુલ શિફાલ
અંગ્રેના ગારી બાબતનેમાં “વિદ્યાર્થીનું”, શાંત કરતાની જ્ઞાનનું છે.

આ વિશેપાંડની પાંડાનું જીવિથીની કંપિનીથી, એટેને કે સં. ૨૦૧૦ શી પ્રાંભીની ચં. ૨૦૧૧ સુધીની
અંગ્રેનાથ, રિંગ, આપણા-લાગ્નો ડિના, વિશેપાંડ-દ્વારાન, સમરલાની વિસ્તૃત કાર્યાલી, યેદી
પ્રથમો વિશેપાંડે રથધ્યાની આસ્ત્રાની શરીર પેરેસનું આયો છે. પ્રસ્તે-પ્રસ્તુતા ચાહેડે કિદ્વા વિનો
આસ્ત્રાને વિશેપાંડની આસ્ત્રાનાની પથેને. ક્રેંડેન શી સરોકૃતાદાન-અસ્ત્રાસત્તાદ શેડ, ગારોનની રસીક ચારોં
અંગ્રેનનો આધ્યાત્મા-રહા છે, લદુપરસત કાંદાની લાશનાની લાશીની પણ અભિનન્દનને પાત્ર છે.

૪ શી અસ્ત્રાંદ વધું પ્રકાશ (કેન થભે) મદાની ભાપાંની જોણ એ અથ તરણના અજનાગ-
દેણક ને રચયિતા કિન્ડિંગાંલ, રથાસાની સુનિશાની કાર્યવિનંયં મદાનાન.

પૂર્ણ મદાંસાંથીને, એની કેનાયગદુનીની, તેમ જ વિવિધ અંધ્યચનાથી આપણા સમાજને
પ્રતિબધિનું રૂચાન પ્રેરણ કરેલ છે. નાના નાના ટેક્સો પ્રસિદ્ધ કરી જૈન ધર્મનો અચાર કેમ થાપ, તેવી
તેમની મેન્યુનુંના રથાસાની આવે છે. “પાંડાનું પેરેની અધ્યાત્મ”ની બુદ્ધિદાદીની બુનરાતો, દિદ્દા તનોંદ,
દિદ્દીંદી, મદાની અને કાંદાની અંદે જી. વાપાંની વણજય, ચાદીયા હન્માન, નક્કોની ત્વાની છુટે લાચ અચાર
છો છે. આ પુરિતાના “કેન ધર્મ”ને લંગના સુખ્ય સિદ્ધાન્તનું સંક્રિમ શરીર નિર્દ્દશ કરવાના
આસ્ત્રાનું છે. પ્રથમ પ્રશ્ન સપાચા છે.

“અંતરેના અસ્ત્રાની”નામનું પુરુષ નુંના-અન્જલોનો, અંત્રાનું છે. પૂર્ણ સુનિશાનીની દીઠ
દીઠ પ્રકાર અને અચારની અન્જલોનો, આ પુરિતાના, સન્નાનેશ, કર્યાનાં. આંજલો છે, કાંબચનાના સરદી
અને સાંદ્રી હોલાધીની સૌ આંદે કરે કરી રથાસાની રીતે. આ નાનાનુંની પુસ્તોનું સંદર્ભ અથવા
અનુભૂતિના સંખ્યાની સાની સંગ્રહણ અથવા સંક્રાંતાની પુસ્તો, એવી રિંગર્નનું ગણિતને આપી છે. નાનાનું
દીઠાં સર્વપ્રસંગનીની ગારી આ પૂન ઉપરોગી છે. પ્રથમ પ્રશ્ન સુનીય છે.

૫. અનંદીધરદીપ-પૂના-સાર્થી-પ્રકાશ અને જૈન બાદ્ધિસત્તાંદ સભા—અભેદાદ, અથવે ખૂબ
પુસ્તક, શી શામિનાયજીનું અધ્યાત્મ. શી વિદ્ધિ-નેત્રી-અનુભ અથથાનાના તરીકેના અભેદાદ
અથવા આ પુસ્તકનો અભિજીત શી ધર્મચંદ્ર અણિની રેખેની શી નાનાનુંની પુસ્તોનું સંદર્ભ અથવા
તેની રચનાના સંખ્યાની સાની સંગ્રહણ અથવા સંક્રાંતાની પુસ્તો, એવી રિંગર્નનું ગણિતને આપી છે. નાનાનું
દીઠાં સર્વપ્રસંગનીની ગારી આ પૂન ઉપરોગી છે. પ્રથમ પ્રશ્ન સુનીય છે.

Reg. No. B. 156

■ ■ ■ मानवलक्षणनु भाषेय ■ ■ ■

संक्षिप्तागां छतां सरस शैलीचे तेमन वन्द्य वन्द्य दृष्टी दृष्टी कथांगो आपोने
आ पुस्तकमो आनंद लक्ष्यने उपयोगी विषयेतु सारी शीरे विवेचन करवागां आप्य
क्र. एकदृश विवार्थ विषयेनो आ पुस्तकामां जमावेश ठर्यो छे.

शीरीके नक्की लाडी लाडी छे. शीरी. यानाना आ पुस्तकातु

भूद्य भाष आप्य आना

धोगो:-श्री लैनवर्म प्रसारक संसाधा-भाषनगर.

द-ज्ञान्यायरत्नावली

श्री वरदेहमरनी संकलयनां आवाहा संसाध असार पुस्तकोना अनन्ते संक्षिप्त शीरे छतां शैली भाषामा
वापु सेनी अने सांघारक्षय ते होड महापुरुषाणा अवनी वर्षावली संलक्षण युक्त आ वंश अनुभी न
आत पाडे छे. असार तेमन सामाविहारां वाचन भारत आ अंश उपयोगी छे. अतो भूद्य याच
रु. १-४-० गोपनेन अखग.

क्षेप्या:-श्री लैन वर्म प्रसारक संसाधा-भाषनगर.

नवप्रसरण आटे ————— सिद्धयक्षवद्युपदर्शन (सचिन) —————
अप्ति उपयोगी॥

तये दिवसनी डिया-विधि, अमासमण्डा, नवकाशवाणी, काउळग, श्री सिद्धयक्षंगोदार-
पूर्वनविधान विगेश विगतो साथे श्री लिद्यकेहा तये पद्वां संक्षिप्त मुदासर स्वद्य छतां
भूद्य यान आड आना।

धोगो:-श्री लैन वर्म प्रसारक संसाधा-भाषनगर.

क्षेप्या-उपयोगी अनेरो. काव्यसंग्रह
निनलक्ष्मि भाटे अनेरो. काव्यसंग्रह

भाषेन्दु काव्यकोमुही

आपायी सबाना सलासाद अंधुमेने आ पुस्तक लेट तरीडे आपवामा आवेद
छे, परन्तु लेयो। सलासाद नयो तेयो। आ पुस्तकानी नोगाली करता हावयो गान
जून तक्कौ वेयालू माटे शैलव याऊमा आवी छे।

पाटु आईडीग, संस्कृतार आपाम, काउन सोण पेण पृष्ठ ३६४

भूद्य भाष उपयोगी॥

धोगो:-श्री लैन वर्म प्रसारक संसाधा-भाषनगर

मुद्रक : साधना मुद्रशालय :: दार्शनिक-भाषनगर